षष्ठ प्रश्न पत्र
व्याकरण (स्त्री-प्रत्यय)

सं॰ शि॰ - साजन कुमार
एस॰ बी॰ एस॰ एस॰ कॉलेज
बेगूसराय ।

1) स्त्रियाम् - 4|1|3

⇒ यह एक अधिकार सूत्र है। "स्त्रियाम्" इस सूत्र से लेकर समर्थानां प्रथमाद्वा 4|1|82 सूत्र से पूर्व तक प्रातिपदिकों से जिन प्रत्ययों का विधान किया जायेगा, वे सभी स्त्रीत्व की विवक्षा में ही होंगे।

2) अजाद्यतष्टाप् - 4|1|4

अर्थ → अजादिगण-पठित शब्दों से तथा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से तद्वाच्य स्त्रीत्व की विवक्षा में 'टाप्' प्रत्यय होता है। जैसे - अजा, चटका आदि।

⇒ अज+टाप् - 'ट्' तथा 'प्' की इत्संज्ञा व लोप होने शेष बचा 'आ'

∴ अज + आ - मिलाने पर

∴ अजा बना।

इसी प्रकार अजादिगण पठित शब्दों से स्त्रीत्व विवक्षा में 'टाप्' प्रत्यय करके * एडक (भेड़) से एडका, * अश्व से अश्वा, * चटक से चटका (चिड़िया) * मूषक से मूषिका (चुहिया) इन जातिवाचक पाँच शब्दों से "जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्" सूत्र से ङीष् प्राप्त था परन्तु उसका बाध करके यहाँ 'टाप्' हुआ।

3) उगितश्च - 4/1/6

अर्थ :- उक् इत्संज्ञक प्रातिपदिको से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीप्' प्रत्यय होता है।

स्पष्टीकरण - शतृ प्रत्ययान्त एवं ईयसुन् प्रत्ययान्त शब्द उगिदन्त प्रातिपदिक होते है, इस प्रकार के शब्दों में 'ङीप्' प्रत्यय होता है। 'ङीप्' का 'ङ्' तथा 'प्' इत्संज्ञक होता है और 'ई' शेष रहता है। जैसे - भवन्ती, पचन्ती, भवन्ती आदि

⇒ भवत् + ङीप् → ङ् तथा 'प्' की इत्संज्ञा
: भवत् + ई → मिलाने पर
: भवन्ती रूप बना।

4) टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरप: - 4/1/15

अर्थ :→ अनुपसर्जन टिड्, ढ, अण्, अञ्, द्वयसच्, दघ्नच्, मात्रच्, तमप्, ठक्, ठञ्, कञ्, और क्वरप् प्रत्ययान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है जैसे -

1) कुरुचरी - कुरुषु चरति (कुरुदेश में चलने वाली) अर्थ में अधिकरण उपपद रहते 'चरेष्टः' से ट' प्रत्यय एवं उपपद समास हुए 'ट' में 'ट' की इत्संज्ञा होती है एवं 'अ' मात्र अवशेष रहता है।

⇒ कुरुचर् + अ + ङीप् (यस्येति च) से 'अ' का लोप प्राप्त होता है।

:> 'ङीप्' के 'ङ्' तथा 'प्' का लोप होने पर 'ई' शेष बचा
:> इस प्रकार कुरुचर + ई = कुरुचरी रूप निष्पन्न

2) नदी :– 'नदट्' पचादिगण पठित प्रातिपदिक है। उसका अर्थ नदी है, 'ट्' की इत्संज्ञा है।

:> नदट् + ङीप् – ट्, ङ् तथा प् की इत्संज्ञा व लोप
:> नद + ई – 'नद्' के 'द्' के 'अ' का लोप यस्येति-च सूत्र
= नद् + ई – मिलाने पर निष्पन्न नदी

3) ऐन्द्री (इन्द्र सम्बन्धी)
:> इन्द्र + ङीप् – साऽस्य देवता' से 'अण्' का आगम
:> इन्द्र + अण् + ङीप् – ण्, ङ् तथा 'प्' की इत्संज्ञा
:> इन्द्र + अ + ई – 'किति च' सूत्र से 'इ' की वृद्धि तथा यस्येति च' से 'अ' का लोप
:> ऐन्द्र + ई – मिलाने पर ऐन्द्री रूप निष्पन्न

4) औत्सी – उत्स, ऋषि नाम अथवा झरना
– उत्स + अञ् + ङीप्
:> उत्सादिभ्योऽञ्' से अञ् का आगम – औत्स + अ + ई
:> 'किति च' सूत्र से आदि वृद्धि – औत्स + ई
:> यस्येति च' सूत्र से अ का लोप – औत्सी
:> मिलाने पर रूप निष्पन्न

5) ऊरुमात्री –
:> प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः सूत्र से मात्रच् का आगम – ऊरु + मात्रच् + ङीप्
: मिलाने पर रूप निष्पन्न – ऊरुमात्री